भारतवाणी

नवंबर 2013

वार्षिक चंदा रु. १००-००

ओम प्रकाश वाल्मीकी
(30/06/1950 - 17/11/2013)

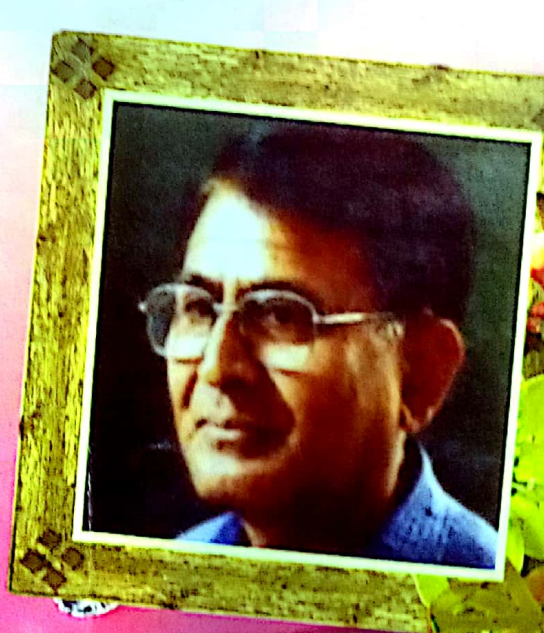

Scanned with CamScanner

भारतवाणी

हिंदी मासिक

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, दिल्ली द्वारा प्राप्त अनुदान से प्रकाशित

वर्ष : 57 | नवंबर- 2013 | अंक - 8

संरक्षक
आर.एफ.नीरलकट्टी जी
व्यवस्थापक संपादक
क. विजयन
सचिव
संपादक
डॉ.चंदूलाल दुबे
संपादक मंडल
डॉ. चंदूलाल दुबे
डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ
डॉ. वी.वी. हेब्बल्ली
डॉ. अमरज्योति

वार्षिक चंदा
रू. 100/-

मनीआर्डर या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा

सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड -580 001
के नाम पर ही भेजें
(न कि संपादक के नाम)

● संपादकीय 2

1. मंजुल भगत के उपन्यासों में चित्रित स्त्री का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन
✍ सुश्री मैना रामदास जगताप 3
2. शानी के साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन
✍ आरिफ महात 7
3. विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग
✍ प्रा. शशिकांत पशीने 'शाकिर' 9
4. हिंदी सिनेमा और संवाद योजना
✍ प्रा.डॉ. विजाया जगननाथ पिंजारी 15
5. रूपनारायण सोनकर के उपन्यासों में दलित विमर्श
✍ सु.श्री अश्विनी काकडे 21
6. इक्कीसवीं सदी की कविता : संवेदन के नए स्वर
✍ डॉ. पंडित बन्ने 25
7. बाल पत्रिकाएँ और बाल जिज्ञासाएँ
✍ डॉ. अमरसिंह वधान 22

● समीक्षा

1. बढ़ते मूल्य : समस्या और समाधान
✍ डॉ. सुरेश उजाला 29

● कविता

1. हाइकु ✍ नलिनी कांत 8

कन्नड विभाग
मैथलीशरण गुप्त

● सभा समाचार 32-40

Scanned with CamScanner

शानी के साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन

आरिफ महात

साहित्य समाज जीवन का दर्पण होता है । भारतीय साहित्य में विभिन्न समाज जीवन को दर्शाया गया है । हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। आधुनिकीकरण के इस दौर में जहाँ सब विकास की ओर उन्मुख है वहाँ हमारे देश में एक ऐसा जनसमुह भी है जो विकास से कोसों दूर है, जो आज भी परंपरागत जीवन मूल्यों का निर्वाह करता है । जिनका बसेरा जंगल, पहाड़ आदि जगहों पर है, जिन्हें हम आदिवासी, जनजाति, जंगली आदि नामों से पुकारते हैं ।

हिंदी साहित्य में आदिवासी समाज को लेकर अनेक साहित्यकारों ने प्रकाश डाला है, जिनमें रांगेय राघव, राजेंद्र अवस्थी, संजीव, विरेंद्र जैन, देवेंद्र सत्यार्थी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । इन नामों के साथ आदिवासी समाज जीवन की सच्ची तस्वीर शानी के साहित्य में परिलक्षित होती है । शानी ने अपने जीवन का कुछ हिस्सा मध्यप्रदेश के बस्तर जिले के अबूझामड़ में बिताया है । सन् 1959 ई. के आसपास शानी ने अमेरिका से आये नतृत्त्वशास्त्र के शोधकर्ता एडवर्ड जे.जे. के साथ तकरीबन अठारह महिने अबूझामड के आदिवासियों के बीच बिताये । इन अठारह महीनों के अपने अनुभवों को उन्होंने 'शालवनों का द्वीप' में पूरे जीवंतता के साथ चित्रित किया है । 'शालवनों का द्वीप' तथा कुछ अन्य कहानियो में गोंड जाति के अंतर्गत आनेवाले माडिया आदिवासी समाज का और उपन्यास 'सांप और सीढ़ी' में हल्बा आदिवासी समाज का चित्रण परिलक्षित होता है ।

'शालवनों का द्वीप' के भूमिका के अंतर्गत शानी कहते हैं – ''शालवनों का द्वीप में मध्यप्रदेश के बस्तर, बस्तर के घोर आदिजातिय भू-भाग अबूझमाड़ और अबूझमाड़ के ओरछा नाम एक छोटे-से गांव के सामाजिक जीवन और उसके यथार्थ का यह एक कथात्मक विवरण है । इसके माध्यम से मैंने वहाँ की विशिष्ट आदि-जाति माड़िया-गोड़ों की जीवन-पद्धति, रीति-रिवाजों, परंपराओं, रूढ़ियों और धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओं के मलबे में दबी मनुष्यता की पीड़ा और उल्लास दोनों को पहचानने की कोशिस की है ।''[1] आदिवासी समाज जीवन के प्रति जनसाधारण ने एक मिथक बनाये रखा है कि उनका जीवन हास-उल्लास, नृत्य-संगीत आदि से भरपूर है । लेकिन शानी ने उनके जीवन को करीब से देखा है, उनके दर्द को महसूस किया है । उन्हें जिंदा रहने के लिए मौत से कठिन यातनाओं को सहते देखा है । तब इन्हें इस मिथकियता पर बड़ा गुस्सा आता है । इनके जीवन को करीब से देखने पर इनके मन में यही विचार आते हैं कि आखिर जीवित मृत्यु और कैसे होती है ? 'शालवनों का द्वीप' में शानी ने जहाँ माड़िया आदिवासियों का मार्मिक चित्रण किया है तो वहीं अपने उपन्यास 'संप और सीढ़ी' में हल्बा जनजाति का चित्रण किया है । हल्बा आदिवासी समाज के संदर्भ में पी.आर. नायडू लिखते हैं – ''बस्तर के हल्बाओं के संबंध में एक उल्लेखनीय बात ये है कि वे किसी एक ही सु-संबद्ध भू-भाग में बसे हुए नहीं हैं वरन् वे जिले के अनेक भागों में यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं । इन भागों की दूरी कहीं-कहीं सैंकड़ों मील है । इसका एक कारण यह है

Scanned with CamScanner

कि एक सैनिक जाति होने के कारण हल्बा लोगों को अपने स्वामियों के साथ यहाँ-वहाँ जाना पड़ा। जहाँ-जहाँ उनके स्वामियों ने अपने गढ़, कोट अथवा जमींदारी निभाई वहाँ बस गये ।''[१]

'साँप और सीढ़ी' में लेखक ने कस्तूरी गांव की कथा कही है । प्रस्तुत उपन्यास में प्रमुख पात्र धान माँ है जो हल्बा आदिवासी समाज की बाल विधवा है । उपन्यास की कथावस्तु धान माँ, उसके बायघर, कस्तूरी गांव और सोनपुर की खदान में काम करते लोगों के इर्द-गिर्द घूमती है ।

साथ ही शानी ने अपनी 'बोलनेवाले जानवर', 'चील', 'वर्षा की प्रतीक्षा', 'फांस', 'वीराने' आदि कहानियों में बस्तर के आदिवासियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । कठिन हालातों में जीते आदिवासियों के जीवन की त्रासदी उनकी कहानियों में देखने मिलती है ।

संक्षिप्त में कह सकते हैं कि शानी के साहित्य में आदिवासी समाज जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है । इनके साहित्य में आदिवासी समाज जीवन के तीज-त्यौहार, उल्लास, उनकी मस्ती और आनंद से भरपूर संस्कृति के चित्रण के साथ उनके जीवन का दर्द, उनकी तकलीफ, पीड़ा आदि का चित्रण है । इस कारण इनके साहित्य में आदिवास जीवन का मार्मिक चित्रण देखने मिलता है । आदिवासियों के अभावग्रस्त जीवन का शानी ने बेबाकी से चित्रण किया है ।

संदर्भ ग्रमथ सूची :

1. शानी : शालवनों का द्वीप, पृ.11
2. पी.आर.नायडू : भारत के आदिवासी, पृ. 109

1029, डी वार्ड, शनिवार पेठ, कोल्हापुर

Scanned with CamScanner